घोषणा-पत्र

मैं (रूपेश कुमार सेंधिया) घोषणा करता हूं कि **"कृषि पत्रकारिता का लक्ष्य समूह पर प्रभाव : मध्य प्रदेश के सागर जिले की रहली तहसील के विशेष संदर्भ में"** लघु शोध प्रबंध मेरे द्वारा संकलित तथ्यों पर आधारित है तथा यह मेरा मौलिक कार्य है। इसे अंशत: या पूर्णत: इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य संस्थान में किसी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है। यह शोध कार्य मैंने श्री राजेश लेहकपुरे, सहायक प्रोफेसर, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के शोध निर्देशन में पूर्ण किया है। मैं घोषणा करता हूं कि इस लघु शोध प्रबंध को पूरा करने में मैंने विश्वविद्यालय के शोध संबंधित सभी नियमों का पालन किया है।

प्रस्तुतकर्ता

रुपेश कुमार सेंधिया

पंजीयन क्रमांक – 2014/05/208/020

दिनांक .....

स्थान – वर्धा

प्रति हस्ताक्षर

(शोध निर्देशक)

आभार

प्रस्तुत शोध कार्य संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के प्राध्यापक श्री राजेश लेहकपुरे के कुशल निर्देशन के बिना पूरा कर पाना संभव नहीं था। आपके सहयोगपूर्ण व्यवहार की बदौलत मैं इस विषय की प्राकल्पना को विकसित कर पाया। शोध की पूर्णता हेतु समय-समय पर मिले बहुमूल्य सुझाव एवं बात्सल्यपूर्ण सहयोग के लिए मैं अपने शोध निर्देशक के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूं।

तत्पश्चात मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता तथा संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निर्देशक, प्रो. (डॉ.) अनिल के. राय 'अंकित' सर के प्रति आभार व्यक्त करता हूं। संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के समस्त प्राध्यापकों डॉ. अख्तर आलम, डॉ. धरवेश कठेरिया, डॉ. रेणु सिंह एवं श्री संदीप कुमार वर्मा का मैं आभारी हूं जिनके सानिध्य में रहकर लगातार कुछ-न-कुछ सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। साथ ही मैं अपने परम आदरणीय गुरुवर श्री संतोश कुमार अहिरवाल, डॉ. विवेक कुमार जायसवाल, डॉ. ललित मोहन, डॉ. राकेश कुमार शर्मा तथा डॉ. अलीम अहमद खान सर, डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर का भी विशेष रूप से आभारी हूं। जिन्होंने शोध में आ रही तमाम समस्याओं को सुलझाते हुए विषय चयन में एवं उचित दिशा निर्देश देने का कार्य किया, जिनके कुशल निर्देशन एवं सूक्ष्म तात्विक दृष्टि से मुझे शोध कार्य पूर्ण करने में काफी ममद मिली। मैं डॉ. संजय तिवारी, डॉ. मनोज मिश्रा तथा श्री वीरेंद्र कुमार रावत जी, गणेश शंकर, प्रदीप कुमार गौतम के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया।

कोई भी व्यक्ति अपने परिवार के संबल और सहयोग के बिना किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सकता, इसलिए मैं अपनी पूज्य माताजी श्रीमती गोमती सेंधिया, पूज्य पिताजी श्री दिलीप कुमार सेंधिया एवं समस्त परिवारजनों का ऋणी व हृदय से आभारी हूं। जिन्होंने मुझे गृह कार्यों से मुक्त रखकर सदैव उच्च शिक्षा के प्रति प्रेरित किया।

मैं एक बार पुन: श्री संतोष कुमार अहिरवाल सर व डॉ. विवेक कुमार जायसवाल सर का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

रूपेश कुमार सेंधिया

प्रस्तावना

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद हिंदी पत्रकारिता का काफी विकास हुआ है। उसने न केवल सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं, बल्कि नए आयाम भी उससे जुड़ गए हैं। आज पत्रकारिता अपने विराट रूप में हमारे सामने उपस्थित है और मनुष्य जीवन व समाज से जुड़े प्रायः प्रत्येक विषय को उसने लक्षित किया है। शिक्षा, चिकित्सा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, विज्ञान, अपराध, राजनीति, ज्योतिष, महिला एवं बाल-कल्याण, शहर-देहात, फैशन सिनेमा, रसोई सहित जीवन के विविध क्षेत्रों से जुड़ी गतिविधियों पर हिंदी सहित भारत की विभिन्न भाषाओं में रोचक एवं जानकारीपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं का प्रचुर मात्रा में प्रकाशन हो रहा है। ऐसा लगता है कि पत्रकारिता से कुछ भी अछूता नहीं है।

ऐसी स्थिति में कृषि भी पत्रकारिता से कैसे अछूती रह सकती है। कहने का तात्पर्य है कि हिंदी पत्रकारिता ने अपने विकास क्रम में विविध स्वरूप ग्रहण किए हैं। इनमें से एक है कृषि। पत्रकारिता के अन्य आयामों की तरह कृषि पत्रकारिता भी अब बड़ी महत्वपूर्ण हो चली है। देश के आर्थिक एवं कृषि संबंधी विकास में इसकी उपयोगिता निर्विवाद है।

यहां यह समझना भी परम आवश्यक होगा कि ग्रामीण पत्रकारिता और कृषि पत्रकारिता दो अलग-अलग चीजें हैं और दोनों को एक दूसरे से जोड़कर नहीं देखा जा सकता। ग्रामीण पत्रकारिता जहां एक ओर ग्राम्य-समाज के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास से जुड़ी है, वहीं दूसरी ओर कृषि पत्रकारिता का संबंध खेती-किसानी या इससे जुड़ी समस्याओं से ही है। आज आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रवेश से कृषि केवल कला ही नहीं रही, बल्कि वह प्रौद्योगिकी का रूप लेती जा रही है। इसलिए आज कृषक के जीवनचक्र, विचारधारा एवं आचरण में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की छाप और दिशा प्रतिबिंबित होने लगी है। चलचित्रों, पत्र-पत्रिकाओं, दूरदर्शन और रेडियो ने एक नई विचारधारा की तरफ कृषकों को बढ़ाया है। आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रवेश से कृषि भी लाभकारी उद्योग के रूप में उभरने लगी है।

कृषि यंत्र निर्माण और बीज उद्योग के माध्यम से कृषि क्षेत्र में अब बड़े-बड़े उद्योग घराने भी शामिल हो रहे हैं। तो वहीं दूसरी तरफ सीमांत व लघु कृषकों और भूमिहीन खेतिहर,

श्रमिकों का एक बड़ा वर्ग भारतीय कृषि तथा कृषि पत्रकारिता की सीमाओं को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहा है।

कृषि पत्रकारिता को सामान्य रूप से लोग खेती से संबंधित खबरों की पत्रकारिता समझते हैं। यह कहीं न कहीं एक हद तक ठीक भी है, लेकिन अब कृषि शब्द का अर्थ काफी व्यापक हो गया है। कृषि शब्द की सीमाओं से खेतों की जुताई, फसलों की बुआई, सिंचाई, निराई-गुड़ाई और कटाई के अलावा कृषक के संपूर्ण जीवन की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य सुरक्षा, धार्मिक विश्वास और राजनीतिक गतिविधियों की चर्चा भी सम्मिलित होती जा रही है।

भारत में कृषि पत्रकारिता की शुरुआत की बात करें तो हम पाते हैं कि इसकी शुरुआत अलीगढ़ की वैज्ञानिक परिषद (साइन्स सोसाइटी) के 'अलीगढ़ गजट' से हुई। इसके उपरांत ग्राम सुधार, कृषि उत्पादन, पंचायतों, सहकारिता, ग्रामोद्योग, पशुपालन आदि विषयों पर अलग-अलग पत्रिकाएं प्रकाशित हुईं'

'कृषि पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य संचार के माध्यमों द्वारा कृषकों तक कृषि एवं कृषि आधारित उद्योग धन्धों की प्रौद्योगिकी के अनुसंधान की उपलब्धियों को पहुंचाना है। तथा इसके साथ-साथ कृषकों के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक जीवन में जागृति लाना है। कृषकों के जीवन में नई चेतना एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करना है ताकि उनका आर्थिक विकास हो सके और उनका जीवन स्तर ऊंचा उठ सके। कृषि का उत्कर्ष और कृषकों का आर्थिक विकास ही कृषि पत्रकारिता का प्रमुख उद्देश्य है।

कुछ कृषि विशेषज्ञों का कहना है कि जिस प्रकार कृषि पत्रकारिता में यंत्रों की मरम्मत, पशुओं के आवास और स्वास्थ्य की चर्चा की जाती है, उसी तरह कृषकों के स्वास्थ्य, आवास और सामाजिक व्यवहार की चर्चा करना कृषि पत्रकारिता का एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रयोजन है। इसी प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए शोध क्षेत्र के कृषकों तक सरकारी योजनाओं की सूचनाएं किस माध्यम से पहुंच रही हैं? कृषकों तक सूचनाएं किस माध्यम से सबसे ज्यादा पहुंच रही हैं? कृषि विकास में मीडिया की स्थिति तथा शोध क्षेत्र में कृषकों की स्थिति, कृषि पत्रकारिता की स्थिति और मीडिया का आंकलन करना इस शोध का प्रयोजन है।

अनुक्रमणिका

आभार **02**

प्रस्तावना **03-09**

प्रथम अध्याय : विषय प्रवेश **07-19**

साहित्य पुनरावलोकन
शोध समस्या
शोध का उद्देश्य
शोध की उपकल्पना
शोध प्रविधि
शोध क्षेत्र एवं सीमाएं

द्वितीय अध्याय: कृषि पत्रकारिता का ऐतिहासिक परिदृश्य **20-35**

2.1 कृषि पत्रकारिता का अर्थ
2.2 कृषि पत्रकारिता की अवधारणा
2.3 कृषि पत्रकारिता का स्वरूप
2.4 प्रिंट मीडिया और कृषि पत्रकारिता
2.4.1 प्राचीनकाल और कृषि पत्रकारिता
2.4.2 मध्यकाल और कृषि पत्रकारिता
2.4.3 आधुनिक काल और कृषि पत्रकारिता
2.5 रेडियो और कृषि पत्रकारिता
2.6 दूरदर्शन और कृषि पत्रकारिता

तृतीय अध्याय: सागर जिला: कृषि एवं मीडिया का परिदृश्य **36-53**

3.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
3.2 भौगोलिक पृष्ठभूमि
3.3 सागर जिला और मीडिया
3.4 सागर जिले का कृषि क्षेत्र
3.4.1 कृषि क्षेत्र का विवरण
3.4.2 कृषक कल्याणकारी योजनाओं का विवरण
3.5 रहली तहसील : आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक परिदृश्य

3.5.1 रहली तहसील का नामकरण

3.5.2 भौगोलिक स्थिति

3.5.3 भू-सांस्कृतिक परिदृश्य

3.5.4 सामाजिक संरचना

3.5.5 आर्थिक स्थिति

3.5.6 राजनैतिक स्थिति

3.6 कृषि क्षेत्र

3.7 रहली तहसील और मीडिया

चतुर्थ अध्याय: कृषि पत्रकारिता का लक्ष्य समूह पर प्रभाव का विश्लेषण 54-94

4.1 कृषि पत्रकारिता एवं लक्ष्य समूह का स्वरूप

4.2 कृषक वर्ग पर प्रभाव का विश्लेषण

4.3 कृषि मजदूर वर्ग पर प्रभाव का विश्लेषण

4.4 कृषि खाद एवं बीज विक्रेताओं पर प्रभाव का विश्लेषण

पंचम अध्याय : कृषक-केस स्टडी और कृषि कार्यक्रम निर्माण का स्वरूप 95-111

5.1 कृषक, मजदूर की स्थितियों का विश्लेषण

5.1.1 उच्च वर्गीय कृषक

5.1.2 मध्यम वर्गीय कृषक

5.1.3 मजदूर वर्ग

5.2 कृषि कार्यक्रम निर्माण का स्वरूप

5.2.1 आकाशवाणी कार्यक्रम अधिकारी का साक्षात्कार

5.3 कृषि योजनाओं के प्रसार के साधन

5.3.1 जिला कृषि विस्तार अधिकारी का साक्षात्कार

5.3.2 कृषि विकासखंड अधिकारी का साक्षात्कार

निष्कर्ष 112-117

सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची 118-120

परिशिष्ट 122-135

प्रथम-अध्याय
विषय प्रवेश

साहित्य पुनरावलोकन

- **नैयर, डॉ. रेणुका. (2002). ग्रामीण क्षेत्र की पत्रकारिता. पंचकूला. हरियाणा साहित्य अकादमी।**

डॉ. रेणुका नैयर द्वारा लिखित ग्रामीण क्षेत्र की पत्रकारिता पुस्तक ग्रामीण पत्रकारिता को नए आयाम प्रदान करती है। इस पुस्तक के पृष्ठ क्रमांक 8 पर प्रथम पंचवर्षीय में कृषि के लिए कितना पैसा रखा गया इस बात की पुष्टि की है। पृष्ठ संख्या 34 पर इन्होंने कृषकों की स्थिति की व्याख्या की है। इस पुस्तक में ग्रामीण परिवेश तथा इससे जुड़े विभिन्न बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है।

- **प्रसाद, डॉ. गोविंद, पांडेय, अनुपम. (2006). पत्रकारिता के विविध आयाम. नई दिल्ली. डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस।**

इस पुस्तक में लेखक ने पृष्ठ संख्या 7 पर ग्रामीण पत्रकारिता की व्याख्या करते हुए, कृषि पत्रकारिता को ग्रामीण पत्रकारिता का ही एक अंग बताया है। लेखक का ऐसा मत है कि कृषि भी ग्रामीण पत्रकारिता की ही विषय वस्तु है। कृषि के अलावा लेखक ने पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों की भी चर्चा की है। लेखक का मानना है कि भारत गांवों का देश है। देश की अधिकतर जनता गांवों में निवास करती है। इस प्रकार ग्रामीण जनता की कठिनाइयों, उनकी आशा-आकांक्षाओं को पत्रकारिता के माध्यम से प्रस्तुत करना समाचार-पत्रों का मुख्य दायित्व है। वैसे आजकल प्रांतीय तथा राष्ट्रीय पत्रों में भी ग्रामीणों के लिए विशिष्ट कॉलम प्रकाशित किए जाने लगे हैं। लेखक के अनुसार प्रवीण दीक्षित ने इन विषयों को निम्न तरह से विभाजित किया है- कृषि प्रसार, उद्यानशास्त्र, शस्य विज्ञान, कृषि अर्थशास्त्र, पशुपालन एवं दुग्ध उद्योग, कृषि कीटशास्त्र और जीव विज्ञान, मुद्रा एवं कृषि रसायन, वंशागति और पादप प्रजनन, पादप क्रिया शारीरिक, भूमि संरक्षण, पादप रोग विज्ञान। इस पुस्तक में लेखक ने रेडियो तथा टी.वी. पत्रकारिता की सीमाओं को व्याख्यायित करते हुए लिखा है कि ''रेडियो पत्रकारिता की नजर से आकाशवाणी के वे कार्यक्रम प्रभुत्व हैं जिनमें समाचार भी सम्मिलित होता है।

आकाशवाणी के लिए समाचार तैयार करने की प्रमुख जिम्मेदारी समाचार सेवा प्रभाग पर होती है। समाचारों के अलावा सामयिकी, जिले अथवा राज्य की चिट्ठी अथवा, रेडियो न्यूजरील, समाचार दर्शन इत्यादि कार्यक्रम मुख्य हैं जो रेडियो पत्रकारिता की सीमा में आते हैं।

वहीं दूसरी ओर टी.वी. पत्रकारिता की सीमाओं को रेखांकित करते हुए लेखक लिखता है कि रेडियो पत्रकारिता की तरह टी.वी. के समाचार कार्यक्रम टी.वी. पत्रकारिता का क्षेत्र हैं। इसके लिए विशेष तकनीकी अनुभव है। श्रव्य ध्वनि, दृश्य लेखन, शब्द ध्वनि, ध्वनि तथा फिल्म तकनीक का ज्ञान भी टी.वी. पत्रकार के लिए अपेक्षित है। पत्रकारिता के अर्थ के साथ-साथ उसके क्षेत्र तथा उसके उद्भव व विकास पर विस्तार से चर्चा की गई है।

- **पांडेय, डॉ. पृथ्वीनाथ. (2001). पत्रकारिता : परिवेश और प्रवृत्तियाँ. 15-ए. महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद. लोक भारती प्रकाशन।**

लेखक ने इस पुस्तक में पत्रकारिता के उद्भव एवं विकास पर विस्तार से चर्चा की है तथा साथ ही साथ ग्रामीण-पत्रकारिता को बड़े ही अच्छे ढंग से विश्लेषित किया है। ''लहलहाते खेतों, उपवनों और खुले मैदानों से घिरे हुए छोटे-छोटे कच्चे, लिपे-पुते घरों और झोपड़ों का दूसरा नाम 'गांव' है।''

गांव के संदर्भ में पत्रकारिता एक व्यापक अर्थ रखती है। औद्योगिकीकरण तथा शहरीकरण के बावजूद आज देश की 70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है। महात्मा गांधी के शब्दों में ''भारत की आत्मा गांवों में ही बसती है।'' लेखक के अनुसार ''ग्रामीण पत्रकारिता की दशा और दिशा अभी स्पष्ट नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों की आवश्यकता राजनीति नहीं है, वरन् गांव के लोगों, खासकर वहां के कमजोर वर्गों की आर्थिक और सामाजिक विसंगतियों को जानना, समझना और विश्लेषित करना है तथा उन परिवर्तनों की दिशा इंगित करना है, जो इन समस्याओं के निराकरण करने और कमजोर वर्गों की सामाजिक और आर्थिक दशा सुधारने के लिए प्रयोग में लाए जा रहे हैं।'' लेखक ने ग्रामीण पत्रकारिता के अंग के रूप में कृषि-पत्रकारिता को समाहिता किया है।

बदलते परिवेश में ग्रामीण पत्रकारिता की अपनी सार्थक और अलग पहचान बने तो कैसे बने? इसके लिए आवश्यक है कि एक नियोजित कार्यक्रम द्वारा ग्रामीण समाचारों को देश की मुख्य धारा से जोड़ना होगा। ग्रामीण आवश्यकताओं और समस्याओं की सही तस्वीर देश के समक्ष प्रस्तुत करनी होगी।

सामाजिक कुरीतियों, भूमि का असमान वितरण, जमींदारों का शोषण तथा कृषि की सफलता-असफलता, मजदूरों के गुण-दोषों का सम्यक् आकलन करना होगा। कृषि के विकास में ग्रामीणों की आवश्यकता पर सरकार ध्यान दे रही है अथवा नहीं, मौसम में किस चीज की पैदावार अच्छी है और किस चीज की बुरी? कब किस किस्म के बीज प्रयोग में लाए जाएं और किस किस्म के नहीं, कृषकों के लिए कौन-सी फसल सस्ती पैदावार दे सकती है और कौन सी नहीं इत्यादि खबरों को देश के मुख्यपृष्ठ पर लाना होगा। लेखक का मत है कि, खेद है कि ये सब नहीं हो पा रहा है। स्पष्ट है हमारे सिद्धांत और व्यवहार में जमीन-आसमान का फर्क है। सिद्धांत रूप में ग्रामीण पत्रकारिता को तो हम व्यापक अर्थों में लेते हैं। भारत की आत्मा गांवों में बसती है, कहकर स्वीकार करते हैं, पर व्यवहार में गांव से ही दूर रहना चाहते हैं। इसके अलावा इस पुस्तक में ग्रामीण पत्रकारिता तथा कृषि पत्रकारिता से संबंधित कुछ समाचारों को भी प्रस्तुत किया गया है।

जैसे- 1. नकली उर्वरकों और कीटनाशक दवाओं से नष्ट होती फसलें।

2. पपीता की खेती किस प्रकार करें?

3. ग्रामीण बैंक में खाता न खुलने से लोग परेशान।

4. मेडिकल प्रमाणपत्र के लिए बीस रुपए वसूलने का आरोप।

- **त्रिपाठी, प्रो. मधुसूदन. (2010). पत्रकारिता विधाएं : वित्त एवं संभावनाएं. 4/32 सुभाष गली. विश्वास नगर. शाहदरा. दिल्ली. गणपति प्रकाशन ।**

पत्रकारिता के उद्भव की व्याख्या करते हुए लेखक लिखता है कि ‘‘मानव जो कुछ भी देखता है उसे अन्य व्यक्तियों को बतलाना चाहता है, साथ ही सबकी बातों को जानना चाहता है। किसी घटना को परखना और उसका वर्णन करना मानवीय आत्मा की एक सहज

प्रवृत्ति है। इसी भावाभिव्यक्ति की प्रवृत्ति के कारण जनमाध्यमों का आविष्कार हुआ तथा 'सब जनहिताय सब जनसुखाय' के प्रति व्यग्रता ने पत्रकारिता को जन्म दिया।''

पत्रकारिता के आशय को बताते हुए इस पुस्तक में लिखा गया है कि समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व-बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं। श्रीमद्भगवदगीता में जगह-जगह पर 'शुभदृष्टि' का प्रयोग है। यह 'शुभदृष्टि' ही पत्रकारिता है जिसमें गुणों को परखना तथा मंगलकारी तत्वों को प्रकाश में लाना सम्मिलित है।

पत्रकारिता के क्षेत्र को बताते हुए इस पुस्तक में लिखा गया है कि समाचार-पत्र, जनता की संसद है जिसका अधिवेशन सदा चलता रहता है। इस समाचार-पत्र रूपी संसद का कभी सत्रावसान नहीं होता।

जिस प्रकार से संसद में अलग-अलग समस्याओं पर चर्चा की जाती है, विचार विमर्श किया जाता है, सरकार का ध्यान आकृष्ट किया जाता है, उसी प्रकार से समाचार-पत्रों का स्वरूप भी व्यापक तथा बहुआयामी होता है।

ग्रामीण-पत्र को परिभाषित करते हुए इस पुस्तक में लिखा गया है कि जिन समाचार-पत्रों में 40 प्रतिशत से अधिक सामग्री गांवों के बारे में, कृषि, पशु-पालन, बीज, खाद, कीटनाशक, पंचायती राज, सहकारिता आदि विषयों पर होगी, उन्हीं पत्रों को ग्रामीण-पत्र माना जाएगा। उनमें ग्रामीण तथा कृषि विकास संबंधी समाचारों को प्रमुखता दी जानी चाहिए।

भारत में कृषि पत्रकारिता की विकास यात्रा कहां से आरंभ हुई तथा उसका विकासक्रम किस प्रकार का रहा है इस बात पर भी विस्तार से चर्चा इस पुस्तक में की गई है। इस बात की पुष्टि पुस्तक की इन पंक्तियों से होती है ''भारत में पहला कृषि पत्र 'कृषि सुधार' 1914 में और 'कृषि' 1918 में पहली बार आगरा से छपे। सन् 1934-35 में बंगाल में कृषि संबंधी पत्र-पत्रिकाएं बंगला भाषा में छपी और अंग्रेजी में 1940 में 'फार्मर' तथा 'एग्रीकल्चर' गजट नामक पत्र निकले।''

ग्रामीण एवं कृषि पत्रकारिता की समस्याओं पर भी चर्चा की गई है। उन समस्याओं को रेखांकित करते हुए लिखा गया है कि ''आज भी ग्रामीण तथा कृषि पत्रकारिता समस्याओं से घिरी है। सरकारी संरक्षण का अभाव इसकी सबसे बड़ी समस्या है। विज्ञापन की कमी, कागज की महंगाई, उत्तम व रोचक सामग्री की कमी भी इसकी समस्याएं हैं।'' इसके साथ-साथ लेखक सरकारी कृषि पत्र एवं पत्रिकाओं के बारे में लिखते हुए लेखक कहता है कि ''जहां तक सरकारी कृषि पत्रिकाओं का प्रश्न है, उन्हें न विज्ञान की चिंता है और न प्रसार बढ़ाने के प्रयत्न किए जाते हैं। सभी सुविधाओं के बावजूद अधिकतर पत्रिकाएं समय के काफी बाद प्रकाशित होती हैं। उनमें प्रकाशित सामग्री का सही समय पर उपयोग नहीं हो पाता है। सभी ग्रामीण पत्र, आर्थिक कठिनाइयों से जूझ रहे हैं तथा पत्रकारिता के स्तर को कायम रखते हुए अपना अस्तित्व भी बनाए हुए हैं।''

- **पाराशर, डॉ. रामकृष्ण एवं पाराशर, नकुल. (1992). कृषि पत्रकारिता का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष. दिल्ली विश्वविद्यालय. हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय।**

इस पुस्तक में लेखक ने खाद्यान्नों एवं अन्य कृषि उत्पादों में असाधारण वृद्धि का मूल स्त्रोत आधुनिक विज्ञान पर आधारित भारतीय कृषि की उस नई प्रौद्योगिकी को माना है, जिसको हमारे कृषि-वैज्ञानिकों ने अपने सतत अनुसंधान एवं प्रयोगों से शोध-संस्थानों, प्रयोगशालाओं, अनुसंधान केंद्रों तथा कृषि विश्वविद्यालयों में विकसित किया है। इस प्रौद्योगिकी के घटकों में सुधरे कृषि यंत्र, सिंचाई की सुविधा अथवा जल-प्रबंध तथा फसल चक्र के साथ समस्याग्रस्त क्षेत्र की नई कृषि विधियां उल्लेखनीय है। कृषि उत्पादन की इस नई प्रौद्योगिकी को कृषकों तक पहुंचाने में कृषि पत्रकारिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

लेखक का मत है कि कृषि पत्रकारिता को कृषि विकास का दर्पण और कृषि-अनुसंधान के प्रसार का वाहक माना जाता है। वह कृषक और कृषि वैज्ञानिक के बीच आपसी तालमेल का एक सशक्त एवं स्थाई माध्यम भी है।

कृषि पत्रकारिता की व्याख्या करते हुए लिखा गया है कि ''कृषि पत्रकारिता कृषि के अनुसंधान विकास और कृषक के जीवन पर आधारित होती है।''

कृषि पत्रकारिता एक दायित्वपूर्ण व्यवसाय है, तो दूसरी ओर कृषक जीवन के शाश्वत मूल्यों की कसौटी है, जिस पर तात्कालिक अथवा सामयिक घटनाओं का तटस्थता से आकलन करके महत्वपूर्ण निष्कर्षों को प्रसारित किया जाता है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था और देश की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या प्रभावित होती है। इसी कारण भारत जैसे कृषि प्रधान देश में कृषि पत्रकारिता का अपना विशेष महत्व है। कृषि पत्रकारिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ उसके व्यवहारिक पक्ष की भी व्याख्या की गई है।

- **वधवा, प्रियंका. (2010). कृषि पत्रकारिता. नई दिल्ली. यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।**

लेखिका ने इस पुस्तक में कृषि शब्द के व्यापक अर्थ की व्याख्या की है। इस बात की पुष्टि ये पंक्तियां करती हैं ''अब कृषि शब्द का अर्थ व्यापक हो गया है। उसकी सीमाओं में खेतों की जुताई, फसलों की बुवाई, सिंचाई, निराई-गुड़ाई और कटाई के अतिरिक्त कृषक के समग्र जीवन की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य सुरक्षा, धार्मिक विश्वास और राजनीतिक गतिविधियों की चर्चा भी सम्मिलित होती जा रही है।''

कृषि पत्रकारिता के विकास क्रम की व्याख्या करते हुए लेखिका कहती हैं कि 19वीं सदी के अंतिम वर्षों में मुद्रणालय लगने के बाद हिंदी गद्य विकास के साथ कृषि पत्रिकाओं के प्रकाशन से भारत में हिंदी की आधुनिक कृषि पत्रकारिता का उद्भव हुआ।

कृषि पत्रकारिता के उद्देश्यों की चर्चा भी इस पुस्तक में की गई है। जिसमें बताया गया है कि कृषि और कृषकों का आर्थिक विकास ही कृषि पत्रकारिता का प्रमुख उद्देश्य है। इसके साथ-साथ कृषि पत्रकारिता के प्राचीनकाल, मध्यकाल तथा आधुनिक काल के इतिहास की भी व्याख्या विस्तार से की गई है। कृषि पत्रकारों के कर्तव्यों एवं दायित्वों की व्याख्या भी विस्तार से की गई है।

- **त्रिपाठी, जय प्रकाश. (2014). मीडिया हूं मैं. कानपुर. अमन प्रकाशन ।**

प्रस्तुत पुस्तक में मीडिया के इतिहास की व्याख्या को विस्तार से समझाते हुए लेखक ने पौराणिक आख्यानों के अनुसार प्रथम पत्रकार संजय को बताया है। वहीं नारद तथा हनुमान को

भी एक पत्रकार के रूप में बताया है। 'मीडिया में कृषि और कृषकों की उपेक्षा' की स्थितियों को भी चित्रित किया है।

मीडिया में कृषकों की वास्तविक स्थिति को भी विस्तार से बताया गया है। कृषि पत्रकारिता तथा दूरदर्शन के बीच के संबंध को विस्तार से व्याख्यायित किया गया है। कृषि पत्रकारिता तथा कृषक दोनों के लिए नए मीडिया की क्या भूमिका है। इस पर विस्तार से चर्चा इस पुस्तक में की गई है।

- **गौतम, रूपचंद. (2008). प्रिंट मीडिया: सिद्धांत एवं व्यवहार. दिल्ली. श्री नटराज प्रकाशन।**

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने प्रिंट मीडिया क्या है इसको विस्तार से समझाया है तथा भारत में प्रिंट मीडिया की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर भी विस्तार से चर्चा की गई है। पत्रकारिता के स्वरूप की व्याख्या करते हुए पत्रकारिता के उद्देश्यों पर भी प्रकाश डाला गया है। पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों की व्याख्या के साथ-साथ कृषि पत्रकारिता की व्याख्या भी इस पुस्तक में लेखक द्वारा की गई है।

- **डोगरा गीता. (2005). हिंदी पत्रकारिता: आज के संदर्भ में. जालंधर. दीपक पब्लिशर्स।**

उपरोक्त पुस्तक में लेखक ने ग्रामीण पत्रकारिता की विस्तार से व्याख्या की है तथा कृषि पत्रकारिता को ग्रामीण पत्रकारिता के अंतर्गत समेटने का एक सफल प्रयास किया है। लेखक का मत है कि कृषि पत्रकारिता ने कृषकों को सूचित एवं शिक्षित करने का प्रयास किया है। आज खेतों में बैलों के साथ जुताई नहीं होती क्योंकि पत्रकारिता ने कृषकों को कृषि की नई पद्धतियों से अवगत करवा दिया है।

कृषि पत्रकारिता के अंतर्गत आने वाले विषयों जैसे- मिट्टी का परीक्षण, कृषि रसायनों की जानकारी, कृषि अर्थशास्त्र, पशु पालन, वृक्षारोपण आदि की भी चर्चा इस पुस्तक में की गई है।

- **रानी, डॉ. राजकुमारी. (2005). पत्रकारिता : विविध विधाएं. इलाहाबाद. जयभारती प्रकाशन।**

इस पुस्तक में लेखिका ने पत्रकारिता की विविध विधाओं के अंतर्गत कृषि पत्रकारिता को भी परिभाषित करते हुए उसकी विस्तार से चर्चा की है।

लेखिका के मतानुसार कृषि पत्रकारिता ग्रामीण पत्रकारिता का ही एक अंग है। उन्होंने कृषि पत्रकारिता को बताते हुए लिखा है कि कृषि पत्रकारिता में खेती, किसानी तथा उससे जुड़ी बातों का विवरण होता है, जबकि ग्रामीण पत्रकारिता में ग्राम्य जीवन की संपूर्ण झलक देखने को मिलती है।

- **तिवारी, डॉ. अर्जुन. (2005). संपूर्ण पत्रकारिता, वाराणसी. विश्वविद्यालय प्रकाशन।**

डॉ. अर्जुन तिवारी ने अपनी पुस्तक 'संपूर्ण पत्रकारिता' के प्रथम खंड: पत्रकारिता का स्वरूप विवेचन के पांचवें अध्याय में कृषि पत्रकारिता की बात कही है।

इन्होंने इस पुस्तक में कृषि पत्रकारिता को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''कृषि क्रांति, हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, कुटीर उद्योग, लोक संस्कृति एवं ग्रामों के समग्र विकास हेतु समर्पित पत्रकारिता ही कृषि पत्रकारिता है।

इसके साथ-साथ इस पुस्तक में इन्होंने कृषि शब्द की व्याख्या महार्षि पतंजलि के काल से जोड़कर की है। लेखक का ऐसा मानना है कि आज कृषि पत्रकारिता आधुनिक जीवन के सभी पक्षों तक व्यापक हो गई है। इस पुस्तक में इन्होंने कृषि जगत को रोजगार से जोड़कर उसके व्यापक अर्थ को स्पष्ट किया है। कृषि पत्रकारिता के क्या-क्या उद्देश्य हैं उनकी व्याख्या इस पुस्तक में विस्तार से की गई है। जैसे- कृषकों को सूचित, शिक्षित और निर्देशित करना कृषि पत्रकारिता के उद्देश्य है।

भारत में कृषि के पिछड़े होने के क्या-क्या कारण हैं। उसकी भी चर्चा विस्तार से की गई है। कृषि पत्रकारों के क्या-क्या दायित्व होने चाहिए उसको भी बड़े ही अच्छे तरीके से

व्याख्यायित किया गया है। विश्व-बाजार और उदारीकरण के दौर में आज भारतीय कृषि की स्थिति क्या है इसको भी रेखांकित किया गया है।

कृषि शिक्षा-व्यवस्था और पत्रकारिता के बारे में भी इस पुस्तक में विस्तार से बताने का प्रयास किया गया है। कृषि साहित्य लेखन की समस्याओं पर भी चर्चा इस पुस्तक में की गई है।

लेखक का मत है कि आजकल कृषि पत्रिकाओं का संपादन ऐसे साक्षरों द्वारा हो रहा है जो बांस की खेती और गन्ना पेड़ के आरोपण का मर्म नहीं जानते। कुल मिलाकर कृषि पत्रकारिता क्या है, उसकी क्या समस्याएं एवं चुनौतियां हैं तथा कृषि पत्रकार व उसके दायित्व क्या है इन सारी बातों की चर्चा इस पुस्तक में की गई है।

- **मल्होत्रा, महेन्द्र. (2012). मीडिया-सामाजिक : राजनैतिक एवं आर्थिक सरोकार. जयपुर शहर. रावत प्रकाशन।**

इस पुस्तक के अध्याय क्रमांक एक विषय बोध में लेखक ने कृषि पत्रकारिता को परिभाषित किया है तथा उन्होंने ग्रामीण पत्रकारिता तथा कृषि पत्रकारिता के बीच के अंतर को व्याख्यायित करते हुए कृषि पत्रकारिता के अंतर्गत कौन-कौन से विषय समाहित रहते हैं, इसकी व्याख्या की है। जैसे- -

1. मृदा एवं कृषि रसायन, 2. कीट शास्त्र और जीव विज्ञान प्रसार, 3. पशुपालन व दुग्ध उद्योग, 4. पादप क्रिया शारीरिक, 5. वंशगति और पादप प्रजनन, 6. भूमि संरक्षण, 7. पादप रोग विज्ञान, 8. उद्यान शास्त्र इत्यादि।

इन सबके अलावा कृषि पत्रकारिता के अंतर्गत बाजार भाव, दुग्ध उत्पादन, फल उत्पादन, फसल रिपोर्ट, तिलहन, अनाज आगामी योजनाओं की खबरें प्रकाशित होती हैं।

कुल मिलाकर कृषि पत्रकारिता का एक सामान्य परिचय इस पुस्तक के इस अंश में देने का प्रयास किया गया है।

- **शोध कार्य : कृषि व्यवसायीकरण, उभरती नई सामाजिक व्यवस्था**

इस शोध कार्य को शोधार्थी अमोल प्रभाकरराव कुकड़े द्वारा वर्ष 2012-13 में शोध निर्देशक प्रो. मनोज कुमार, निदेशक, म.गां.फ्यूजी गुरुजी अध्ययन केंद्र के निर्देशन में संपन्न किया गया है। इस शोध कार्य के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि कृषि व्यवसायीकरण से कैसी नई सामाजिक व्यवस्था उभर कर सामने आ रही है।

- **विश्व कृषि संचार** - मासिक पत्रिका, फरवरी-2015

इस पत्रिका के प्रस्तुत अंक में जैविक खेती के महत्व को रेखांकित किया गया है तथा बताया गया है कि आवश्यकता से अधिक रासायनिक खाद के उपयोग से मिट्टी की गुणवत्ता खराब हुई है।

इस अंक में बताया गया है कि कृषक बायोगैस और इसके अपशिष्ट के तौर पर मिलने वाली जैविक खाद के इस्तेमाल पर ध्यान दें। इसके अलावा कृषि उत्पादन की स्थिति और संभावनाओं के बारे में भी बताया गया है।

कृषि रसायनों के असंतुलित उपयोग से पर्यावरणीय असंतुलन कैसे फैलता है तथा उसका मानव स्वास्थ्य पर कैसा प्रभाव पड़ेगा इसकी चर्चा भी इस पत्रिका में की गई है।

इसके अलावा मशरूम की खेती विभिन्न ऋतुओं में किस प्रकार से की जाती है इसको भी बताया गया है।

कद्दू वर्गीय सब्जियों की वैज्ञानिक खेती किस प्रकार से करनी चाहिए इसको भी इस पत्रिका में बताया गया है। भिंडी की उन्नत खेती के बारे में भी बताया गया है। किस प्रकार से इसकी खेती की जाती है तथा साथ ही साथ कृषि सामान्य ज्ञान से संबंधित प्रश्नों को भी इस पत्रिका में स्थान दिया गया है।

सूरजमुखी, गन्ना, उड़द आदि की खेती व उसकी किस्मों के बारे में बताया गया है। इसके अलावा गर्मियों में सब्जियों की नर्सरी को रोगों से कैसे बचाएं इस पर भी चर्चा की है।

तथा अदरक का उपयोग एक औषधि के रूप में किस प्रकार से कर सकते हैं इस पर भी विस्तार से बात इस पत्रिका में की गई है।

- **कृषिका शोध पत्रिका**

यह पत्रिका भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रकाशित की जाती है। इसके संपादक डॉ. जगदीप सक्सेना है। यह एक प्रकार से शोध पत्रिका है जनवरी-जून 2013 के इस अंक में मधुमिता दास तथा ओम प्रकाश वर्मा का शोध संकलित किया गया है जिसमें बताया गया है कि अपशिष्ट जल का उपयोग कृषि सिंचाई में किस प्रकार से किया जा सकता है। रुचि तिवारी एवं कुलदीप धमा द्वारा एक शोध कार्य प्रस्तुत किया है जिसमें बताया गया है कि पशु अपशिष्ट उत्पादों से जीवाणु भोजियों का प्रथक्कीकरण तथा औषधी प्रतिरोधी घावों का उपचार किस प्रकार से किया जा सकता है।

इस शोध पत्रिका में अशोक कुमार सोमानी द्वारा एक शोध पत्र प्रस्तुत किया गया है जिसमें ''वातावरण के अधिक तापमान पर बोरिक एसिड से आलू बीज का सुरक्षित उपचार'' किस प्रकार से किया जा सकता है।

इसके साथ-साथ आर. आर. चापके, जे.वी. पाटिल एवं महेश कुमार द्वारा ''ज्वार के अग्रपंक्ति प्रदर्शनों का प्रभाव'' नामक शोध पत्र भी छापा गया है। अंजली अग्रवाल द्वारा एक शोध कार्य प्रस्तुत किया गया है जिसमें बताया गया है कि ''सूक्ष्म पोषक तत्वों का संकर तथा साहीवाल गायों की रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा दुग्ध उत्पादन पर क्या और कितना प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा और भी कई महत्वपूर्ण जानकारी इस शोध-पत्रिका में है जो कृषकों के काम आ सकती है।

- **कृषि प्रसंस्करण दर्पण- राजभाषा पत्रिका**

जनवरी-जून 2012

यह पत्रिका अर्धवार्षिकीय है तथा इसके संपादक डॉ. मृदुला देवी हैं जो एक वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक हैं।

यह शोध-पत्र संकलित आधारित पत्रिका है इस पत्रिका में कृषि से संबंधित विभिन्न विषयों या समस्याओं पर शोध पत्र प्रस्तुत किए गए हैं तथा साथ ही साथ समस्याओं के समाधान खोजने का प्रयास किया गया है। यह पत्रिका कृषकों को सूचित व शिक्षित करने का एक सशक्त माध्यम है।

साहित्य समीक्षा से मुझे अपने शोध विषय में बहुत ज्यादा मदद मिली जो निम्न प्रकार है-

1. शोध विषय को समझना एवं शोध प्रारूप के अनुरूप शोध विषय का शीर्षक तैयार करने में मदद मिली।
2. कृषि पत्रकारिता की अवधारणा व्यापकता एवं वर्तमान स्थिति का ज्ञान मिला जो शोध के लिए सहायक रहा।
3. कृषि पत्रकारिता और कृषि क्षेत्र का अंतर्संबंध समझने का प्रयास किया गया।
4. विषय के उद्देश्य, उपकल्पना और शोध समस्या को समझने हेतु मदद मिली।

- **शोध समस्या**

कृषि पत्रकारिता में कृषक वर्ग निहित है इसलिए कृषि पत्रकारिता के प्रभाव के दायरे में कृषक वर्ग की तमाम गतिविधियों का आंकलन करना और कृषि पत्रकारिता तथा कृषक वर्ग के बीच अंर्तसंबंधों का अध्ययन करना इस शोध की समस्या है।

- **शोध की उपकल्पना**

1. संबंधित शोध क्षेत्र (रहली तहसील) में कृषकों तक संचार माध्यमों की पहुंच कम है।
2. कृषक वर्ग कम पढ़ा लिखा होने के कारण उसकी सोच का दायरा सीमित है।
3. कृषि विज्ञान पर आधारित विशिष्ट पत्र-पत्रिकाओं की पहुंच आम कृषक वर्ग तक नहीं है।
4. कृषि से संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी कृषक वर्ग को नहीं है।

- **शोध का उद्देश्य**

1. कृषकों तक सरकारी योजनाओं की सूचनाएं किस माध्यम से पहुंच रही हैं, इसका आंकलन करना।
2. कृषकों तक सूचनाएं किस माध्यम से सबसे ज्यादा पहुंच रही हैं, इसका आंकलन करना।
3. कृषि विकास में मीडिया की भूमिका का आंकलन करना।
4. रहली क्षेत्र में कृषकों की स्थिति, कृषि पत्रकारिता की स्थिति और मीडिया का आंकलन करना।

- **शोध प्रविधि**

प्रस्तुत शोध कार्य का अध्ययन क्षेत्र मध्य प्रदेश के सागर जिले की रहली तहसील है। इस शोध में दैव निर्दशन पद्धति द्वारा रहली तहसील के सर्वाधिक आबादी वाले दस गांवों को चुनकर, वहां से प्रश्नावली, साक्षात्कार, अनुसूची, केस स्टडी के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया है।

शोध में उत्तरदाताओं को एक ही विकल्प चुनने की स्वतंत्रता है। सही तथ्यों तक पहुंचने के उद्देश्य से प्रश्नावली हेतु 100 कृषक, 70 कृषि मजदूर एवं 30 कृषि कीटनाशक तथा खाद बीज बिक्रेताओं को शामिल किया गया है। इस प्रकार शोध में कुल 200 उत्तरदाताओं को शामिल किया गया है।

शोध का क्षेत्र एवं सीमाएं

प्रस्तुत शोध म.प्र. के सागर जिले की रहली तहसील के कृषक वर्ग, कृषि मजदूर वर्ग तथा कृषि कीटनाशक एवं खाद बीज विक्रेताओं के इस लक्षित समूह तक ही सीमित है। इसके साथ-साथ सभी प्रकार के मीडिया की केवल रहली तहसील के लक्षित समूह तक पहुंच को ही इस शोध कार्य में ध्यान में रखा गया है।